KBN JOURNAL OF DIVERSE RESEARCH

Vol 1. Issue 1 .2024

कथा साहित्य में स्त्रीविमर्श तेलुगू कहानी 'थारवाहिका'

जे.जानकी

अध्यक्ष हिंदी विभाग], के.बी.एन.कॉलेज (ऑटोनॉमस) विजयवाड़ा.

थारवाहिका श्रीमति पी. सत्यवति की कहानी है जो 2011 में लिखी गयी हैं। दुर्गा एक आपार्टमेंट के वाचमन की पत्नी है। दो बच्चों की माँ है। अपने परिवार केलिए सबेरे उठने से लेकर शामतक मेहनत करती ही रहती है। अपने पति के काम भी वही करती आती है। एक यंत्र के सामन काम करती हुई वह अपने पारिवारिक जीवन को सावधाने से आगे बढ़ाती है। नाम केलिए ही पति वामचान है वाचमान के सारे काम दुर्गा ही पूरी करती है। वाचमन पानकालु के पिता अपनी थोड़ी बहुत जायदाद अपनी पुत्री के नाम लिखकर पुत्री का विवाह अने भानजे से करवाता है और समझता है कि अपने अंतिम समय आराम से बेटी के यहाँ गुजर जायेगा। लेकिन दामाद इस भार दाने केलिए तैयार नहीं होता। इसलिए उसे लाचार होकर अपने बेटे के यहाँ आना पड़ता है। उसे अपनी बहु दुर्गा से डर है कि उसके मुह से कौन सी बात निकलेगी? और अपनी गलती की आलोचना करेगी। पिता का आगमन पानकालु को पसंद नहीं। उसका डर है बिल्डर क्या कहेगा? लेकिन दुर्गा अपने ससुर के प्रति अपना कर्तव्य निभाती हुई उसे भी अपना पारिवारिक सदस्य बनाती है। एक सप्ताह के बाद बिल्डर पूछता है कि क्या यह बूढ़ा भी आपके साथ रहेगा तो पानकालु ने कहा जी नहीं वह चले जायेगा। लाचार होकर पानकालु के पिता एक दिन रात समय नदी में कूदकर अपनी इहलीला समाप्त करने के उद्देश्य से अंधकार में बाहर निकलने को तैयार होता है। इस वक्त दुर्गा उसे रोक लेती है और कहती है कि अगर वह जाने को कहता तो तुम्हें जाना ही है क्या?